

कविता कृष्णमूर्ति सुब्रह्मण्यम द्वारा किए गए फ्यूजन संगीत के प्रयोग: भारतीय रागात्मकता, आधुनिक संगीत-संरचना और वैश्विक संगीत-संवाद का अध्ययन

ANTIMA DHUPAR

PH. D SCHOLAR, PERFORMING ARTS (MUSIC), LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY, INDIA

DR. AMANDEEP SINGHMAKKAR

ASSISTANT PROFESSOR, DEPARTMENT OF PERFORMING ARTS, LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY, INDIA

Published on 18.09.2026

सारांश

फ्यूजन संगीत विभिन्न संगीत परंपराओं के तत्वों को एक साथ प्रस्तुत करने की ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें उनकी विशिष्ट पहचान और संगीतात्मक विशेषताओं का समन्वय होता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में गायिका कविता कृष्णमूर्ति सुब्रह्मण्यम द्वारा फ्यूजन संगीत में किए गए प्रयोगों का अध्ययन किया गया है। शोध का उद्देश्य यह समझना है कि उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत की रागात्मकता, स्वर-अलंकारों और लयात्मक विशेषताओं को आधुनिक, पाश्चात्य तथा सिम्फोनिक संगीत-संरचनाओं के साथ किस प्रकार समन्वित किया है। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें चयनित फिल्म गीतों के संगीतात्मक तत्वों का विश्लेषण, गायिका के साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी तथा उनके ग्लोबल फ्यूजन, स्वयं रचित भजनों, सिम्फोनिक संगीत और अंतरराष्ट्रीय सहयोगों से संबंधित सामग्री का अध्ययन किया गया है। विश्लेषण में राग, स्वर, ताल, लय, आलाप, मींड, मुरकी, गमक, तान, भाव-अभिव्यक्ति तथा आधुनिक हार्मनी और ऑर्केस्ट्रेशन जैसे तत्वों पर ध्यान दिया गया है। अध्ययन से संकेत मिलता है कि कविता कृष्णमूर्ति ने अपनी भारतीय शास्त्रीय संगीत की नींव को बनाए रखते हुए विभिन्न संगीत-संरचनाओं के अनुरूप अपनी गायन-शैली में अनुकूलन किया। उनके प्रयोगों में भारतीय रागात्मकता और आधुनिक संगीत-तत्वों का समन्वय दिखाई देता है। यह अध्ययन उनके फ्यूजन संगीत में योगदान और भारतीय गायन-शैली के वैश्विक संगीत-संदर्भों में उपयोग को समझने का प्रयास है।

प्रमुख शब्द: कविता कृष्णमूर्ति सुब्रह्मण्यम, फ्यूजन संगीत, भारतीय शास्त्रीय संगीत, रागात्मकता, पाश्चात्य हार्मनी, सिम्फोनिक संगीत, वैश्विक संगीत।

ABSTRACT

Fusion music brings together elements from different musical traditions while retaining their distinctive musical characteristics. This research paper examines the fusion music experiments of singer Kavita Krishnamurti Subramaniam, focusing on the integration of Indian raga-based expression with modern, Western, and symphonic musical structures. The study follows a descriptive and analytical approach. It draws on the musical analysis of selected film songs, information obtained through an interview with the singer, and materials related to her global fusion projects, self-composed devotional songs, symphonic works, and international collaborations. The analysis focuses on musical elements such as raga, swara, tala, rhythm, alap, meend, murki, gamak, taan, emotional expression, Western harmony, and orchestration. The study indicates that Kavita Krishnamurti Subramaniam adapts her vocal style to different musical structures while drawing on her foundation in Indian classical music. Her experiments demonstrate ways in which Indian raga-based elements can be integrated with contemporary and symphonic arrangements. The paper explores her contribution to fusion music and the presentation of Indian vocal expression within wider global musical contexts.

Keywords: Kavita Krishnamurti Subramaniam, Fusion Music, Indian Classical Music, Raga-based Expression, Western Harmony, Symphonic Music, Global Music.

1. भूमिका

संगीत मानव की भावनाओं, विचारों और अनुभवों की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम है। भारतीय संगीत की परंपरा में शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोक, फिल्मी और सुगम संगीत की विविध धाराएँ विकसित हुई हैं। शास्त्रीय संगीत में राग, स्वर, ताल और लय के साथ आलाप, तान, मींड, गमक, मुरकी, कण-स्वर तथा आंदोलन जैसे तत्व रागात्मक पहचान और भाव-संवेदना का निर्माण करते हैं (गर्ग, 2020; परांजपे, 2010)। आधुनिक समय में भारतीय संगीत का संपर्क पाश्चात्य, जैज, पॉप, रॉक, इलेक्ट्रॉनिक और विश्व संगीत से बढ़ा, जिससे ऐसी संरचनाएँ विकसित हुईं जिनमें भिन्न परंपराओं के तत्व साथ-साथ कार्य करते हैं। फ्यूजन संगीत इसी प्रक्रिया का परिणाम है (फैरेल, 1997; लावेज़ोली, 2006)।

भारत में फ्यूजन की प्रवृत्ति का एक लंबा इतिहास रहा है। बीसवीं सदी के मध्य में पंडित रविशंकर, उस्ताद अली अकबर खाँ और यहूदी मेनुहिन जैसे कलाकारों के संयुक्त प्रयोगों ने भारतीय राग-संगीत को पाश्चात्य मंचों तक पहुँचाया, और बाद के दशकों में जैज तथा रॉक संगीतकारों ने भारतीय वाद्यों और रागों को अपनाया (लावेज़ोली, 2006)। इसी काल में भारतीय फिल्म संगीत ने भी पाश्चात्य ऑर्केस्ट्रा, जैज बैंड, लैटिन ताल और बाद में इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों को अपनी धुनों में समाहित किया (बूथ, 2008; रानाडे, 2006)। इस प्रकार फ्यूजन भारतीय संगीत के लिए कोई बाहरी या आकस्मिक घटना नहीं, बल्कि निरंतर चलने वाली सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जिसमें कलाकार अपनी परंपरा को नए संदर्भों में पुनर्परिभाषित करते हैं।



कविता कृष्णमूर्ति (जन्म 1958, नई दिल्ली) की गायकी की आधारभूमि हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रही; उन्होंने बाल्यावस्था में श्री बलराम पुरी से प्रशिक्षण प्राप्त किया (हांगकांग फिलहार्मोनिक ऑर्केस्ट्रा, तिथि उपलब्ध नहीं)। लंबे फिल्मी अनुभव ने उन्हें विभिन्न संगीतकारों, भाषाओं और वाद्य-संयोजनों के साथ कार्य करने का अवसर दिया, और आगे उनका संगीत-संसार ग्लोबल फ्यूजन, सिम्फोनिक संगीत, स्वयं की रचनाओं तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोगों तक विस्तृत हुआ। विशेष रूप से यह देखा गया कि फ्यूजन के बाहरी तत्वों के साथ-साथ उनकी स्वयं की आवाज़, स्वर-संचालन, अलंकार, लय, उच्चारण और भाव-अभिव्यक्ति में किस प्रकार का अनुकूलन दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का केंद्र यह समझना है कि उन्होंने भारतीय संगीत की मूल रागात्मक पहचान को बनाए रखते हुए आधुनिक और वैश्विक संगीत-संरचनाओं के साथ किस प्रकार संवाद स्थापित किया।

2. साहित्य-समीक्षा

2.1 कविता कृष्णमूर्ति की संगीत-यात्रा और बहुआयामी गायकी

कविता कृष्णमूर्ति भारतीय फिल्म संगीत की प्रमुख गायिकाओं में रही हैं, लेकिन उनका संगीत केवल पार्श्वगायन तक सीमित नहीं रहा। उपलब्ध स्रोतों के अनुसार उन्होंने शास्त्रीय संगीत, फिल्म संगीत, ग़ज़ल, भक्ति-संगीत, पॉप तथा फ्यूजन सहित विभिन्न संगीत क्षेत्रों में कार्य किया है। हांगकांग फिलहार्मोनिक के कलाकार-परिचय में भी उनकी शास्त्रीय, ग़ज़ल, भक्ति-संगीत और इंडी-पॉप प्रस्तुतियों के साथ पश्चिमी जैज, लोकप्रिय तथा शास्त्रीय कलाकारों के साथ सहयोग का उल्लेख मिलता है।

ऑलम्यूजिक के अनुसार 1999 में डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम ने उन्हें ग्लोबल फ्यूजन परियोजना में प्रमुख गायिका के रूप में शामिल किया। इस परियोजना का उद्देश्य विभिन्न एशियाई और पश्चिमी संगीत परंपराओं को एक साथ लाना था।

2.2 ग्लोबल फ्यूजन में कविता कृष्णमूर्ति

कविता कृष्णमूर्ति के फ्यूजन संगीत की चर्चा में डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम का 1999 का ग्लोबल फ्यूजन विशेष महत्व रखता है। सुब्रह्मण्यम फाउंडेशन के अनुसार यह एल्बम पाँच महाद्वीपों के कलाकारों को एक साथ लाने वाली महत्वपूर्ण परियोजना थी और इसमें कविता कृष्णमूर्ति प्रमुख गायिका के रूप में शामिल थीं।

एल्बम की समीक्षा में 'जिप्सी ट्रेल' में कविता कृष्णमूर्ति की आवाज़ के साथ भारतीय वाद्य-संगीत और स्पेनिश गिटार के संयोजन का उल्लेख मिलता है। ऑलम्यूजिक भी इस रचना में कविता कृष्णमूर्ति, जॉर्ज स्टुंज और भारतीय शास्त्रीय कलाकारों की सहभागिता को रेखांकित करता है।

इस परियोजना का महत्व इसलिए है कि यहाँ कविता कृष्णमूर्ति की गायकी पारंपरिक हिंदी फिल्म गीत की संरचना से आगे बढ़कर ऐसे संगीत वातावरण में आती है, जिसमें भारतीय, स्पेनिश तथा अन्य वैश्विक संगीत-तत्त्व एक साथ कार्य करते हैं।

2.3 कविता कृष्णमूर्ति की स्वयं की दृष्टि में फ्यूजन

कविता कृष्णमूर्ति के फ्यूजन संगीत को समझने के लिए उनका स्वयं का दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण है। एक प्रकाशित साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम से मिलने के बाद उनके संगीत में एक नया आयाम जुड़ा और उनकी दृष्टि फ्यूजन संगीत की

ओर अधिक विस्तृत हुई। उन्होंने यह भी कहा कि पहले उनका अधिकांश समय फिल्म संगीत में रहा था, जबकि बाद में उन्हें विभिन्न संगीतकारों और संगीत परंपराओं के साथ काम करने तथा अलग-अलग प्रस्तुतियाँ सुनने के अवसर प्राप्त हुए।

यह स्रोत प्रस्तुत शोध के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह फ्यूजन को केवल बाहरी स्रोतों के आधार पर नहीं, बल्कि स्वयं गायिका के अनुभव और संगीत-दृष्टि के आधार पर समझने का अवसर देता है।

2.4 अस्मिता और अन्य सहयोगात्मक परियोजनाएँ

कविता कृष्णमूर्ति और डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम का सहयोग ग्लोबल फ्यूजन तक सीमित नहीं रहा। डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम की आधिकारिक वेबसाइट पर अस्मिता को कविता कृष्णमूर्ति के साथ तथा एथेंस को कविता कृष्णमूर्ति और बिंदु सुब्रह्मण्यम के साथ संबंधित परियोजनाओं के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

अस्मिता में 'हिंदू प्रार्थना' (Hindu Prayer) जैसी रचनाओं में दोनों कलाकारों के सहयोग का उल्लेख मिलता है। एप्पल म्यूजिक पर इसे 2004 में जारी रचना के रूप में दर्ज किया गया है। इन परियोजनाओं से कविता कृष्णमूर्ति की गायकी का एक ऐसा पक्ष सामने आता है, जिसमें पारंपरिक भारतीय स्वर-संवेदना को व्यापक वाद्य-संगति और सहयोगात्मक संगीत संरचनाओं में प्रस्तुत किया गया।

2.5 फ्यूजन से सिम्फोनिक संगीत तक

कविता कृष्णमूर्ति का संगीत-विस्तार आगे चलकर वाद्यवृंदीय और सिम्फोनिक प्रस्तुतियों तक भी पहुँचा। सुब्रह्मण्यम फाउंडेशन के अनुसार उन्होंने बीजिंग सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा, लीपजिग फिलहार्मोनिक, लंदन सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा और लिपाया सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा जैसी संस्थाओं के साथ एकल गायिका के रूप में कार्य किया है।

इसी प्रकार 2020 में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की वार्षिक रिपोर्ट में कास्टिल एंड लियोन सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा (स्पेन) के साथ डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम और कविता कृष्णमूर्ति की संयुक्त प्रस्तुति का उल्लेख मिलता है। यह चरण प्रस्तुत शोध के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि सिम्फोनिक संगीत में गायिका को केवल धुन प्रस्तुत करने के बजाय बड़े वाद्यवृंदीय संयोजन, पाश्चात्य हार्मनी की संरचना और सामूहिक वाद्य-संगति के साथ अपनी गायन-अभिव्यक्ति को समायोजित करना पड़ता है।

2.6 भारत सिम्फनी और आधुनिक सिम्फोनिक प्रयोग

कविता कृष्णमूर्ति के नाम से 'भारत सिम्फनी' का 2021 का एल्बम भी उपलब्ध है। एप्पल म्यूजिक पर इसे 2021 में सुब्रह्मण्यम एंटरटेनमेंट द्वारा जारी चार रचनाओं वाले एल्बम के रूप में दर्ज किया गया है।

यह सामग्री कविता कृष्णमूर्ति की संगीत-यात्रा को फिल्म संगीत से आगे सिम्फोनिक संगीत और बड़े वाद्यवृंदीय प्रारूप तक समझने के लिए उपयोगी है।

2.7 वैश्विक संगीत और अंतरराष्ट्रीय सहयोग

कविता कृष्णमूर्ति ने भारतीय संगीत की सीमाओं से बाहर भी अनेक कलाकारों और संगीत परंपराओं के साथ कार्य किया। एक स्रोत के अनुसार वे ग्लोबल फ्यूजन की प्रमुख एकल गायिका थीं, जिसमें पाँचों महाद्वीपों के कलाकार शामिल थे।

वर्ल्ड म्यूजिक सेंटर की रिपोर्ट में भी उन्हें ग्लोबल फ्यूजन की प्रमुख गायिका के रूप में उल्लेखित किया गया है तथा उनके संगीत-सहयोगों में शास्त्रीय, ग़ज़ल और फिल्म संगीत के साथ विभिन्न वैश्विक संगीत शैलियों की उपस्थिति बताई गई है।

इसके अतिरिक्त, 2020 की एक परियोजना में सोफिया के यूरोपीय रिकॉर्डिंग सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा के साथ 'ज्यूपिटर सिम्फनी' में कविता कृष्णमूर्ति की सहभागिता का उल्लेख मिलता है।

2.8 उपलब्ध साहित्य में कविता कृष्णमूर्ति के फ्यूजन संबंधी अध्ययन की स्थिति एवं शोध-अंतराल

उपलब्ध स्रोतों से यह स्पष्ट होता है कि कविता कृष्णमूर्ति के फ्यूजन कार्यों का उल्लेख विभिन्न जीवन-वृत्त संबंधी परिचयों, संस्थागत स्रोतों, एल्बम संबंधी दस्तावेजों, संगीत कार्यक्रमों की रिपोर्टों और साक्षात्कारों में मिलता है। ग्लोबल फ्यूजन, अस्मिता, एथेंस, वाद्यवृंदीय सहयोग तथा सिम्फोनिक परियोजनाएँ उनकी बहुआयामी संगीत-यात्रा को दर्शाती हैं। हालाँकि इन स्रोतों में मुख्यतः उनकी

सहभागिता, परियोजनाओं और उपलब्धियों का विवरण मिलता है। उनकी गायकी में भारतीय शास्त्रीय तत्त्व किस प्रकार फ्यूजन की संगीत-संरचना के अनुसार परिवर्तित या अनुकूलित होते हैं—जैसे मीड, मुरकी, कण-स्वर, गमक, तान, स्वर-संचालन, लय और उच्चारण—इसका व्यवस्थित संगीत-विश्लेषण बहुत कम मिलता है। यही प्रस्तुत शोध का प्रमुख शोध-अंतराल है। इसलिए वर्तमान अध्ययन कविता कृष्णमूर्ति के फ्यूजन कार्यों को केवल उनके संगीत-जीवन की उपलब्धि के रूप में नहीं देखता, बल्कि उनकी गायकी में होने वाले संगीतात्मक अनुकूलन के आधार पर उसका विश्लेषण करता है।

2.9 सैद्धांतिक आधार

कविता कृष्णमूर्ति की फ्यूजन गायकी का विश्लेषण करने के लिए भारतीय संगीत के स्वर, राग, ताल, लय, आलाप, मीड, मुरकी, कण-स्वर, गमक और तान जैसे तत्वों को आधार बनाया गया है। इसके साथ पाश्चात्य हार्मनी, वाद्यवृंद संयोजन और सिम्फोनिक संगीत-संरचना को भी अध्ययन में शामिल किया गया है।

इस प्रकार पूर्ववर्ती साहित्य से प्राप्त सैद्धांतिक आधार तथा कविता कृष्णमूर्ति से संबंधित उपलब्ध प्राथमिक और द्वितीयक सामग्री को जोड़कर उनके फ्यूजन संगीत का विश्लेषण किया गया है।

3. समस्या-कथन

भारतीय फ्यूजन संगीत पर उपलब्ध अधिकांश अध्ययन वाद्य-संगीत, संगीतकारों अथवा फिल्मी ऑर्केस्ट्रेशन पर केंद्रित हैं। गायक/गायिका किस प्रकार अपनी शास्त्रीय गायकी को हार्मनी, इलेक्ट्रॉनिक बीट और सिम्फोनिक संरचना के अनुसार ढालते हैं, इस प्रश्न का गायन-तकनीक के स्तर पर विश्लेषण बहुत कम हुआ है। कविता कृष्णमूर्ति जैसी शास्त्रीय प्रशिक्षित गायिका, जिन्होंने फिल्म, फ्यूजन और सिम्फनी—तीनों क्षेत्रों में कार्य किया, के प्रयोगों का समग्र अध्ययन उपलब्ध नहीं है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की समस्या है—'कविता कृष्णमूर्ति के फ्यूजन संगीत प्रयोगों में भारतीय रागात्मकता और आधुनिक/पाश्चात्य संगीत-संरचना के बीच संबंध तथा उनकी स्वर-अनुकूलन प्रक्रिया का विश्लेषण।'

4. अध्ययन के उद्देश्य

1. कविता कृष्णमूर्ति के फ्यूजन संगीत प्रयोगों—फिल्मी गीतों, ग्लोबल फ्यूजन, स्वयं रचित रचनाओं तथा सिम्फोनिक परियोजनाओं—में भारतीय और पाश्चात्य/आधुनिक संगीत-तत्वों के संयोजन का अध्ययन करना।
2. फ्यूजन संदर्भों में उनकी गायन-तकनीक, स्वर-अनुकूलन तथा भारतीय संगीत की मूल पहचान के संरक्षण का विश्लेषण करना।

5. शोध-प्रश्न

1. कविता कृष्णमूर्ति के फ्यूजन प्रयोगों में भारतीय संगीत-तत्त्व (राग, आलाप, लोक-लय) तथा पाश्चात्य/आधुनिक तत्त्व (हार्मनी, कॉर्ड, इलेक्ट्रॉनिक बीट, ऑर्केस्ट्रेशन) किस प्रकार संयोजित हुए हैं?
2. विभिन्न फ्यूजन संरचनाओं में गाते हुए उन्होंने अपनी गायकी को किस प्रकार अनुकूलित किया, और क्या इस अनुकूलन में भारतीय रागात्मक पहचान सुरक्षित रही?

6. शोध-विधि

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (descriptive-analytical) गुणात्मक शोध-पद्धति पर आधारित रहा। प्राथमिक स्रोत के रूप में कविता कृष्णमूर्ति से साक्षात्कार लिया गया, जिससे फ्यूजन संगीत, ग्लोबल फ्यूजन, डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम के साथ सहयोग तथा स्वयं की रचनाओं से संबंधित अनुभव प्राप्त किए गए। द्वितीयक स्रोतों में संगीत-ग्रंथ, शोध-पुस्तकें, परियोजना-विवरण, संगीत-संस्थाओं के प्रकाशित विवरण तथा समाचार-लेख सम्मिलित किए गए।

नमूना-चयन उद्देश्यपूर्ण (purposive) पद्धति से किया गया। फिल्मी फ्यूजन के अंतर्गत 'कुच्ची कुच्ची रक्कम्मा', 'दांडिया आट्टुमुमाडा', 'काधल इल्लामले', 'अलबेला सजन आयो री', 'ढोली तारो ढोल बाजे' और 'निंबूडा निंबूडा' चुने गए; व्यापक फ्यूजन-यात्रा हेतु ग्लोबल फ्यूजन, स्वयं रचित भजन, फ्रीडम सिम्फनी, महात्मा सिम्फनी, भारत सिम्फनी तथा अन्य सहयोगात्मक परियोजनाएँ

ली गई। चयनित रचनाओं का बार-बार श्रवण करके तत्त्व-आधारित विश्लेषण किया गया। भारतीय पक्ष में राग, स्वर, ताल, लय, आलाप, मींड, मुरकी, कण-स्वर, गमक, तान, लोक-धुन और भाव-अभिव्यक्ति को; तथा आधुनिक/पाश्चात्य पक्ष में हार्मनी, कॉर्ड, सिंथेसाइजर, इलेक्ट्रॉनिक बीट, ड्रम्स, स्ट्रिंग्स और ऑर्केस्ट्रेशन को विश्लेषण की इकाई बनाया गया। विश्लेषण के लिए प्रत्येक रचना हेतु एक विश्लेषण-सारणी तैयार की गई, जिसमें भारतीय तत्त्व, पाश्चात्य/आधुनिक तत्त्व, वाद्य-संयोजन तथा गायिका द्वारा किया गया स्वर-अनुकूलन अलग-अलग स्तंभों में दर्ज किया गया। साक्षात्कार की सामग्री को विषयगत (thematic) रूप से वर्गीकृत किया गया—फ्यूजन से प्रथम परिचय, हार्मनी के साथ गायन की चुनौती, स्वयं की रचना की प्रक्रिया तथा सिम्फोनिक अनुभव। प्राप्त तथ्यों को साक्षात्कार-सामग्री और प्रकाशित स्रोतों से मिलाकर (triangulation) परिणाम निकाले गए।

7. परिणाम एवं विवेचना

7.1 फ्यूजन संगीत की वैचारिक भूमि

सार्वक फ्यूजन केवल बाहरी ध्वनियों का जोड़ नहीं है; इसमें प्रत्येक परंपरा की मूल विशेषताओं को समझकर उनके बीच संबंध स्थापित करना आवश्यक है। भारतीय संगीत में राग धुन और भाव की आधारभूमि देता है तथा ताल-लय संरचना और गति प्रदान करते हैं (Clayton, 2000), जबकि पाश्चात्य संगीत में हार्मनी, कॉर्ड, ऑर्केस्ट्रेशन और डायनेमिक्स प्रमुख हैं। फ्यूजन में राग मुख्य मेलोडिक संरचना बन सकता है, पियानो-गिटार हार्मनी दे सकते हैं, तबला-मृदंगम भारतीय ताल बनाए रखते हुए ड्रम्स और बेस आधुनिक गति दे सकते हैं, और बाँसुरी, सितार या वायलिन भारतीय रंग बनाए रखते हैं (मिश्र, 1973)। अध्ययन में पाया गया कि कविता कृष्णमूर्ति की शास्त्रीय पृष्ठभूमि ने उन्हें राग और अलंकारों की समझ दी, जबकि फिल्मी अनुभव ने आधुनिक ध्वनि-संरचनाओं के साथ काम करने का अभ्यास दिया।

7.2 कविता कृष्णमूर्ति के फिल्मी गीतों में फ्यूजन संगीत के तत्त्व

कविता कृष्णमूर्ति द्वारा गाए गए फिल्मी गीतों में भारतीय शास्त्रीय संगीत की रागात्मकता, स्वर-संचालन, मींड, मुरकी, कण-स्वर, गमक, तान, ताल एवं लय के साथ पाश्चात्य हार्मनी, वाद्य-संयोजन, ऑर्केस्ट्रेशन तथा आधुनिक संगीत-प्रयोगों का संयोजन दिखाई देता है। उनकी गायकी की विशेषता यह है कि वे गीत की प्रकृति के अनुसार अपनी शास्त्रीय गायन-तकनीक में आवश्यक परिवर्तन करती हैं। इस प्रकार उनके फिल्मी गीतों में फ्यूजन केवल वाद्य-संगीत के स्तर पर नहीं, बल्कि स्वर, गायन-शैली, लय, उच्चारण और भाव-अभिव्यक्ति के स्तर पर भी दिखाई देता है।

- 'कुच्ची कुच्ची रक्कम्मा' गीत में लोकधुन, बोल-प्रधान गायन और समूह-स्वर के साथ सिंथेसाइजर, इलेक्ट्रॉनिक बीट, ड्रम प्रोग्रामिंग और आधुनिक पर्कशन मिले; कविता कृष्णमूर्ति की आवाज में लोक-सहजता बनी रही, किंतु स्वर-गति और उच्चारण आधुनिक बीट के अनुरूप ढले।
- 'दांडिया आट्टमुमाडा' में दांडिया-प्रेरित लोक-ताल के साथ डांस-बीट और इलेक्ट्रॉनिक पर्कशन का संयोजन था, जहाँ उन्होंने तेज लय में स्पष्ट शब्दोच्चारण और नियंत्रित स्वर-प्रक्षेपण का प्रयोग किया।
- 'काधल इल्लामले' में शास्त्रीय अलंकरण के स्थान पर धुन और भाव को प्राथमिकता देते हुए आवाज को इलेक्ट्रॉनिक टेक्सचर के अनुरूप ढाला गया।
- 'अलबेला सजन आयो री' में रागात्मक धुन, आलाप, मींड, मुरकी और तान के साथ स्ट्रिंग्स, की-बोर्ड और फिल्मी ऑर्केस्ट्रेशन जुड़े, फिर भी शास्त्रीय रागात्मकता बनी रही।
- 'ढोली तारो ढोल बाजे' और 'निंबूडा निंबूडा' गीतों में क्रमशः गुजराती और राजस्थानी लोक-तत्त्व आधुनिक ऑर्केस्ट्रेशन से जुड़े।
- इन गीतों का विश्लेषण दर्शाता है कि फिल्मी फ्यूजन में भारतीय और आधुनिक पाश्चात्य तत्त्वों का अनुपात गीत की प्रकृति के अनुसार बदलता है। लोक-आधारित गीतों में भारतीयता धुन, बोल और उच्चारण में, जबकि आधुनिकता ताल एवं ध्वनि-संयोजन में दिखाई देती है। इसके विपरीत, रागाधारित गीतों में भारतीय मेलोडी और

अलंकरण के साथ हार्मनी एवं स्ट्रिंग्स का प्रयोग हुआ। विभिन्न भाषाओं में गायन के दौरान कविता कृष्णमूर्ति ने उच्चारण और स्वर-संतुलन बनाए रखते हुए अपनी गायन-शैली को अनुकूलित किया। इस प्रकार, परिणाम Morcom (2007), Booth (2008) और Ranade (2006) के विचारों को गायन के स्तर पर भी पुष्ट करते हैं।

7.3 ग्लोबल फ्यूजन : भारतीय आलाप और पाश्चात्य हार्मनी

साक्षात्कार से ज्ञात हुआ कि डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम के साथ बेंगलुरु में फ्यूजन गायन का अवसर उनके लिए नई कार्यप्रणाली था। 1999 में जारी 'ग्लोबल फ्यूजन' (Smithsonian National Museum of Asian Art, 1999.) में विभिन्न महाद्वीपों के संगीतकारों को साझा संरचना में प्रस्तुत किया गया, जिसमें जॉर्ज ड्यूक, अल जेरो, लैरी कॉरियल और एर्नी वॉट्स जैसे कलाकार सहभागी थे। इसमें उनका गायन मुख्यतः आलाप-आधारित था, किंतु आलाप को बदलती कॉर्ड-संरचना के भीतर प्रस्तुत करना था। उस समय उन्हें पाश्चात्य संगीत-संकेतन का औपचारिक ज्ञान नहीं था; डॉ. सुब्रह्मण्यम ने कॉर्ड्स और राग के भीतर प्रयोज्य स्वरों के बारे में समझाया, और उन्होंने हार्मोनिक परिवर्तन के अनुसार आलाप ढाला। यह परिणाम महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ हार्मनी केवल संगति नहीं थी, बल्कि वह गायिका के स्वर-चयन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रही थी—भारतीय रागात्मकता और पाश्चात्य हार्मनी के बीच संरचनात्मक संवाद स्थापित हुआ।

इस एल्बम की रिकॉर्डिंग लॉस एंजेलिस के अल्फा स्टूडियो तथा चेन्नई, बेंगलुरु और मुंबई के स्टूडियो में 1998-99 के दौरान हुई और मिक्सिंग पेरिस में की गई (Masaoka, n.d.)। अलग-अलग महाद्वीपों में हुई इस रिकॉर्डिंग-प्रक्रिया से स्पष्ट होता है कि फ्यूजन केवल मंच पर एक साथ बजाने की क्रिया नहीं, बल्कि स्टूडियो-तकनीक, परतदार (layered) रिकॉर्डिंग और संयोजक की परिकल्पना पर आधारित एक संगठित संगीत-निर्माण है। ऐसे परिवेश में गायिका को अपने आलाप को पहले से निर्मित हार्मोनिक ढाँचे के साथ सटीक रूप से मिलाना पड़ा, जो पारंपरिक शास्त्रीय मंच-प्रस्तुति की स्वतंत्रता से भिन्न अनुभव था।

7.4 स्वयं की रचना की ओर परिवर्तन

साक्षात्कार के अनुसार पार्श्वगायन के अवसर कम होने पर उनमें स्वयं संगीत व्यक्त करने की इच्छा विकसित हुई। बेंगलुरु में अचानक आई एक धुन को उन्होंने गीत का रूप दिया; डॉ. सुब्रह्मण्यम ने धुन और उसके कॉर्ड-परिवर्तनों की सराहना कर और रचनाएँ बनाने हेतु प्रोत्साहित किया। 'एरी मैं तो', 'जो तुम तोड़ो पिया', 'बरसे बदरिया' और 'मेरे तो गिरधर गोपाल' जैसी रचनाओं में उन्होंने धुन-निर्माण किया, जिन्हें वाद्य-वृंद के साथ रिकॉर्ड किया गया। यहाँ भक्ति-संगीत की भाव-अभिव्यक्ति समाप्त नहीं हुई, बल्कि उसे व्यापक ऑर्केस्ट्रल वातावरण मिला, और उनकी भूमिका प्रस्तोता से आगे सृजनकर्ता तक पहुँची।

7.5 सिम्फोनिक संगीत में फ्यूजन का विस्तार

फ्रीडम सिम्फनी, महात्मा सिम्फनी और भारत सिम्फनी इस विस्तार के प्रमुख उदाहरण रहे। महात्मा सिम्फनी का विश्व प्रीमियर 6 अगस्त 2022 को ह्यूस्टन के हॉबी सेंटर में ह्यूस्टन सिम्फनी के साथ हुआ, जिसमें कविता कृष्णमूर्ति और डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम सहभागी थे (Houston Arts Journal, 2022; The Hobby Center, 2022)। इसके बाद भारत की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के अवसर पर मिलान में इसका यूरोपीय प्रीमियर (Consulate General of India, Milan, 2022) तथा मैड्रिड में कास्तिया इ लेओन सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा के साथ इसकी प्रस्तुति हुई (Embassy of India, Madrid, 2022)। भारत सिम्फनी की रचना में भारतीय गायन, तबला-मृदंगम, कोरस और सिम्फनी वाद्य-वृंद का संयोजन है; हांगकांग फ़िलहार्मोनिक के साथ इसका चीन-प्रीमियर फ़रवरी 2021 में प्रस्तावित था, जिसमें कविता कृष्णमूर्ति गायिका थीं, किंतु वह कार्यक्रम रद्द हो गया (Hong Kong Philharmonic Orchestra, 2021); इस रचना की रिकॉर्डिंग 2021 में जारी हुई। फ्रीडम सिम्फनी के पहले और दूसरे मूवमेंट को उन्होंने बिंदु सुब्रह्मण्यम के साथ लाइपजिंग फ़िलहार्मोनिक ऑर्केस्ट्रा के साथ गाया (Subramaniam, 2024)। इन मूवमेंट्स में भारतीय स्वर-रेखा ऑर्केस्ट्रा की स्ट्रिंग्स और ब्रास के ऊपर स्पष्ट रूप से उभरती है, जबकि भारतीय ताल-वाद्य लयात्मक आधार बनाए रखते हैं। विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि बड़े वाद्य-वृंद के बीच आवाज की स्पष्टता, समय-संरचना का पालन और सामूहिक ध्वनि से तालमेल रखते हुए भारतीय स्वर-अभिव्यक्ति बनाए रखना उनकी गायकी से विशेष अनुकूलन की माँग करता था।

7.6 गायन-तकनीक और स्वर-अनुकूलन

परिणामों से ज्ञात हुआ कि मीड, कण-स्वर, मुरकी, खटका, गमक और आंदोलन का प्रयोग रचना के अनुसार बदलता रहा— रागप्रधान रचना में इनका विस्तार अधिक और तेज़ फिल्मी या रिदमिक संरचना में सीमित-चयनित रहा। तेज़ लय में स्वर-गति आधुनिक बीट से संतुलित की गई, भावप्रधान रचनाओं में कोमलता और ठहराव को प्राथमिकता मिली, और विभिन्न भाषाओं में शब्दोच्चारण को लय और भाव से जोड़ा गया। हार्मनी के अनुरूप स्वर-चयन उनकी विशिष्ट क्षमता के रूप में उभरा। जैज़-पॉप कलाकारों के साथ वाक्य-विन्यास और स्वर-प्रक्षेपण में परिवर्तन दिखाई दिया, जिससे अनुकूलन एकतरफा न होकर संवादात्मक प्रक्रिया सिद्ध हुआ। सिम्फोनिक संदर्भ में स्वर-प्रक्षेपण, माइक्रोफ़ोन-उपयोग और सामूहिक संरचना के साथ तालमेल आवश्यक रहे।

7.7 सहयोगात्मक परियोजनाएँ और वैश्विक संवाद

लक्ष्मीनारायण ग्लोबल म्यूजिक फ़ेस्टिवल, जिसने 2004 में ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, मलेशिया और अमेरिका की यात्रा की (Smithsonian National Museum of Asian Art, n.d.), से जुड़ी प्रस्तुतियों में अंतरराष्ट्रीय वादकों की सहभागिता ने भारतीय गायन को विश्व संगीत के व्यापक संदर्भ में रखा। इंडो-जापानी सहयोग से निर्मित एनीमेशन फ़िल्म 'रामायण : द लीजेंड ऑफ़ प्रिंस रामा' (1992), जिसका संगीत वनराज भाटिया ने दिया, में कविता कृष्णमूर्ति ने 'सुमिरन कर ले मनवा' तथा 'रघुपति राघव राजा राम' जैसे भजन गाए (Bharatpedia, n.d.)। इसमें भारतीय कथा और भक्ति-संगीत की संवेदना का जापानी एनीमेशन माध्यम से संबंध स्थापित हुआ, जो दर्शाता है कि फ्यूजन सांस्कृतिक माध्यमों के बीच संवाद का रूप भी ले सकता है। सहयोग का अर्थ केवल एक ही मंच पर दो कलाकारों का उपस्थित होना नहीं, बल्कि संगीतात्मक विचारों और प्रस्तुति-शैलियों के बीच संवाद है। सह-गायन, विषय-आधारित रचनाओं और भारतीय-अंतरराष्ट्रीय कलाकारों की संयुक्त प्रस्तुतियों में स्वर और वाद्य के बीच संवाद की आवश्यकता बढ़ जाती है। इस प्रकार उनकी गायकी एक स्थिर शैली नहीं, बल्कि संदर्भ के अनुसार स्वयं को ढालने वाली संगीतात्मक भाषा के रूप में सामने आई।

7.8 रचना और गायन की भूमिकाएँ तथा समेकित विवेचना

सिम्फोनिक और ग्लोबल परियोजनाओं में डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम की भूमिका मुख्यतः रचना और वाद्य-संयोजन से तथा कविता कृष्णमूर्ति की भूमिका रचना के भीतर रागात्मक गायन से जुड़ी रही। उनकी रागदारी स्वतंत्र शास्त्रीय प्रस्तुति के समान नहीं थी, बल्कि निर्धारित संरचना, हार्मनी और लय के भीतर राग की पहचान व्यक्त करती थी। समेकित रूप से उनके प्रयोगों में तीन परस्पर जुड़े स्तर पाए गए—(क) संगीत-संरचना का स्तर, (ख) गायन-तकनीक का स्तर, और (ग) सांस्कृतिक संवाद का स्तर। इन स्तरों के अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि 'संयोजन' और 'अनुकूलन' उनके यहाँ अलग प्रक्रियाएँ नहीं हैं।

शोध-प्रश्न 1 के उत्तर में पाया गया कि संयोजन तीन रूपों में हुआ—लोकधुन के साथ इलेक्ट्रॉनिक बीट, रागात्मक धुन के साथ ऑर्केस्ट्रल हार्मनी, तथा आलाप के साथ परिवर्तनशील कॉर्ड-संरचना और सिम्फनी वाद्य-वृंदा। शोध-प्रश्न 2 के उत्तर में पाया गया कि वे रचना के अनुसार शास्त्रीय तत्वों की मात्रा और स्वरूप बदलती हैं, फिर भी राग, आलाप और भारतीय अलंकरण उनकी गायकी के आधार बने रहे; अतः भारतीय पहचान समाप्त नहीं हुई, बल्कि उसे नए संदर्भ मिले। यह निष्कर्ष Farrell (1997) और Lavezzoli (2006) के वाद्य-केंद्रित अध्ययनों को गायन-केंद्रित दृष्टि से आगे बढ़ाता है तथा Ranade (2006) के इस विचार को भी पुष्ट करता है कि फिल्मी गीत सीमाओं से परे जाकर विविध संगीत-परंपराओं को आत्मसात करता है और दिखाता है कि शास्त्रीय प्रशिक्षण फ्यूजन में अनुकूलन-क्षमता का आधार बनता है।

7.9 साक्षात्कारों के आधार पर कविता कृष्णमूर्ति की फ्यूजन गायकी

कविता कृष्णमूर्ति की फ्यूजन गायकी के संबंध में विभिन्न प्रतिष्ठित संगीतकारों एवं सहकर्मी कलाकारों के साक्षात्कार महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। देवशीष भट्टाचार्य ने कविता कृष्णमूर्ति को विभिन्न संगीत शैलियों और विधाओं को ग्रहण करने में सक्षम अत्यंत बहुआयामी गायिका बताते हुए उनके शास्त्रीय संगीत-ज्ञान, सीखने की प्रवृत्ति तथा बदलती संगीत-परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने की क्षमता को रेखांकित किया। शंकर महादेवन ने भी उनके साथ कार्य करने के अपने अनुभव को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए उनके बहुआयामी संगीत-व्यक्तित्व का उल्लेख किया। वहीं, एक अन्य सहकर्मी संगीतकार ने कविता कृष्णमूर्ति को

वास्तविक अर्थों में, वर्सेटाइल (versatile) बताते हुए कहा कि वे वेस्टर्न, भारतीय शास्त्रीय तथा अन्य संगीत-विधाओं को समझती हैं और विशेष रूप से फ्यूजन संगीत का अच्छा ज्ञान रखती हैं। उनके अनुसार, डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम के साथ कार्य करते हुए कविता जी ने फ्यूजन संगीत की अनेक बारीकियाँ सीखीं तथा वे उन्हें गुरु के समान सम्मान देती हैं। इसी क्रम में एक अन्य साक्षात्कारदाता ने स्पष्ट किया कि डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम से फ्यूजन संगीत सीखने के बावजूद कविता कृष्णमूर्ति ने अपनी स्वतंत्र गायकी और भारतीय संगीत की विशिष्ट पहचान को बनाए रखा। उनके अनुसार, कविता जी का फ्यूजन संगीत में योगदान भारतीय फिल्म संगीत के योगदान के साथ-साथ अगली पीढ़ी के लिए भी महत्वपूर्ण है। स्वयं कविता कृष्णमूर्ति ने भी एक साक्षात्कार में बताया कि डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम के माध्यम से उनकी दृष्टि फ्यूजन संगीत की ओर विस्तृत हुई और उन्होंने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगीतकारों तथा सिम्फनी ऑर्केस्ट्राओं के साथ कार्य करते हुए संगीत को नए संदर्भों में समझा। उन्होंने फ्यूजन को भारतीय और पाश्चात्य संगीत की समझ तथा दोनों परंपराओं में दक्षता से जुड़ा क्षेत्र माना। इस प्रकार इन साक्षात्कारों से यह स्पष्ट होता है कि कविता कृष्णमूर्ति की फ्यूजन गायकी की विशेषता केवल विभिन्न संगीत शैलियों में गायन तक सीमित नहीं है, बल्कि विभिन्न संगीत परंपराओं को समझना, उनसे सीखना, नई संगीत-संरचनाओं के साथ कार्य करना और उनके भीतर अपनी भारतीय संगीतात्मक पहचान को बनाए रखना उनके फ्यूजन संगीत-व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

7.10 प्रमुख परिणाम

अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख परिणाम प्राप्त हुए—

- पहला, उनकी फ्यूजन यात्रा की आधारभूमि भारतीय शास्त्रीय संगीत में निहित रही। रागात्मकता, स्वर-सौंदर्य, ताल-लय, आलाप और अलंकार उनकी गायकी की मूल संरचना से जुड़े रहे।
- दूसरा, फिल्म संगीत ने उनके लिए फ्यूजन की व्यावहारिक भूमि तैयार की। लोकधुन, शास्त्रीय संगीत, आधुनिक बीट, इलेक्ट्रॉनिक ध्वनि और फिल्मी ऑर्केस्ट्रेशन के साथ काम करने से उनकी स्वर-अनुकूलन क्षमता विकसित हुई।
- तीसरा, फिल्मी फ्यूजन में भारतीय और आधुनिक तत्वों का संयोजन अलग-अलग रूपों में मिला—लोकधुन के साथ इलेक्ट्रॉनिक बीट, शास्त्रीय धुन के साथ ऑर्केस्ट्रल हार्मनी, तथा भारतीय लय के साथ आधुनिक पर्कशन।
- चौथा, ग्लोबल फ्यूजन उनके संगीत-प्रयोग का निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ, जहाँ भारतीय आलाप और पाश्चात्य हार्मनी का सीधा संबंध स्थापित हुआ और हार्मनी ने उनके स्वर-चयन को भी प्रभावित किया।
- पाँचवाँ, स्वयं रचित भजनों के माध्यम से उनकी भूमिका पार्श्वगायिका से आगे बढ़कर रचनात्मक संगीत-सृजन तक पहुँची, और भारतीय भक्ति-संगीत को व्यापक वाद्य-संरचना मिली।
- छठा, फ्रीडम, महात्मा और भारत सिम्फनी जैसी परियोजनाओं में उनकी गायकी भारतीय स्वर-परंपरा और पश्चिमी सिम्फोनिक संरचना के बीच सेतु बनी।
- सातवाँ, फ्यूजन में उनकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता स्वर-अनुकूलन रही, जिसमें स्वर-गति, उच्चारण, अलंकार, भाव, स्वर-प्रक्षेपण और लय रचना के अनुसार परिवर्तित हुए।
- आठवाँ, फ्यूजन में उनकी भारतीय पहचान समाप्त नहीं हुई; रागात्मकता और भारतीय गायन-तकनीक को नई संगीत-संरचनाओं में नए संदर्भ प्राप्त हुए।
- नौवाँ, उनके प्रयोग सहयोगात्मक रहे; भारतीय और विदेशी कलाकारों के साथ काम करते हुए उनकी गायकी और सह-कलाकारों की शैली के बीच पारस्परिक अनुकूलन दिखाई दिया।
- दसवाँ, उनके प्रयोगों को केवल 'शास्त्रीय और पश्चिमी संगीत का मेल' मानना पर्याप्त नहीं; इसमें गायिका की सक्रिय संगीत-समझ, स्वर-चयन और रचना-संरचना की समझ निर्णायक रही।

इन परिणामों से यह भी स्पष्ट हुआ कि उनकी गायकी में परंपरा किसी स्थिर सीमा के रूप में नहीं, बल्कि नई संगीत-संरचनाओं के भीतर सक्रिय रूप से प्रयुक्त आधारभूमि के रूप में कार्य करती है। जहाँ रचना रागप्रधान रही, वहाँ आलाप, मीड, मुरकी और तान अधिक स्पष्ट रहे; वहीं इलेक्ट्रॉनिक या रिदमिक संरचना में वही गायकी अधिक लय-केंद्रित, स्पष्ट उच्चारण वाली और नियंत्रित स्वर-गति के रूप में सामने आई। ग्लोबल फ्यूजन में हार्मनी के अनुसार स्वर-चयन, सिम्फनी में बड़े वाद्य-वृंद के साथ स्वर-संतुलन और सहयोगात्मक प्रस्तुतियों में स्वर-संवाद—ये सभी एक ही व्यापक क्षमता की भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। इसलिए उनके फ्यूजन का केंद्रीय प्रश्न यह नहीं कि 'किस संगीत के साथ गाया गया', बल्कि यह है कि 'उस संगीत के भीतर भारतीय गायकी को किस प्रकार रूपांतरित और प्रस्तुत किया गया'।

8. निष्कर्ष

अध्ययन से निष्कर्ष निकला कि फ्यूजन संगीत में परंपरा और नवीनता का संबंध केवल बाहरी संगीत-संयोजन से निर्धारित नहीं होता; इसके लिए कलाकार की संगीत-समझ, अनुकूलन-क्षमता और विभिन्न परंपराओं के बीच संवाद की क्षमता आवश्यक है। कविता कृष्णमूर्ति की फ्यूजन यात्रा फिल्म संगीत से आरंभ होकर ग्लोबल फ्यूजन, स्वयं रचित भक्ति-रचनाओं, सिम्फोनिक संगीत और अंतरराष्ट्रीय सहयोगों तक विस्तृत हुई। फिल्मी गीतों में उन्होंने लोक और शास्त्रीय तत्त्वों को आधुनिक वाद्य-संरचना से जोड़ा, ग्लोबल फ्यूजन में रागात्मक आलाप को हार्मोनिक परिवर्तन से जोड़ा, और सिम्फनी परियोजनाओं में भारतीय स्वर-परंपरा और पश्चिमी सिम्फोनिक संरचना के बीच सेतु का कार्य किया। उनकी गायकी की प्रमुख विशेषता स्वर-अनुकूलन है—वे स्वर-गति, उच्चारण, अलंकार, भाव, स्वर-प्रक्षेपण और लय को रचना की प्रकृति के अनुसार बदलती हैं, जबकि राग, आलाप, मीड, मुरकी, गमक और लय-बोध उनके संगीतात्मक व्यक्तित्व का आधार बने रहते हैं। अतः उनके प्रयोगों को केवल 'शास्त्रीय और पश्चिमी संगीत का मेल' कहना पर्याप्त नहीं है; वे दर्शाते हैं कि परंपरा को बनाए रखते हुए भी संगीत नए वाद्य-विन्यासों और सांस्कृतिक परिवेशों के साथ निरंतर विकसित हो सकता है।

शैक्षिक दृष्टि से भी यह अध्ययन महत्वपूर्ण है। संगीत-शिक्षा में शास्त्रीय प्रशिक्षण को प्रायः परंपरा के संरक्षण तक सीमित माना जाता है, किंतु कविता कृष्णमूर्ति का उदाहरण यह दर्शाता है कि सुदृढ़ शास्त्रीय आधार कलाकार को हार्मनी, इलेक्ट्रॉनिक संगीत और सिम्फोनिक संरचना जैसे अपरिचित क्षेत्रों में भी आत्मविश्वास के साथ प्रवेश करने की क्षमता देता है। अतः संगीत-पाठ्यक्रमों में राग-शिक्षा के साथ हार्मनी की मूलभूत समझ और सहयोगात्मक प्रस्तुति का अभ्यास जोड़ना उपयोगी हो सकता है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध भारतीय फ्यूजन संगीत के अध्ययन में गायन-केंद्रित दृष्टि जोड़ते हुए यह प्रतिपादित करता है कि परंपरा और नवीनता परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे को समृद्ध करने वाली प्रक्रियाएँ हैं।

9. अध्ययन की सीमाएँ

- अध्ययन चयनित छह फिल्मी गीतों और कुछ प्रमुख संगीत परियोजनाओं तक सीमित रहा; कविता कृष्णमूर्ति के संपूर्ण गायन-संग्रह का विश्लेषण नहीं किया गया।
- विश्लेषण श्रवण-आधारित गुणात्मक पद्धति पर आधारित रहा; इसमें स्वरलिपि (Notation) अथवा स्पेक्ट्रोग्राम जैसे तकनीकी-ध्वनिक विश्लेषण का प्रयोग नहीं किया गया।
- कुछ सिम्फोनिक एवं सहयोगात्मक प्रस्तुतियों की पूर्ण रिकॉर्डिंग सार्वजनिक रूप से उपलब्ध न होने के कारण उनका विश्लेषण परियोजना-विवरणों पर आधारित रहा।

10. भावी अध्ययन की संभावनाएँ

- कविता कृष्णमूर्ति की फ्यूजन रचनाओं का स्वरलिपि-आधारित तथा कंप्यूटर-आधारित ध्वनिक (pitch-contour) विश्लेषण किया जा सकता है।
- अन्य शास्त्रीय प्रशिक्षित पार्श्वगायकों—जैसे शंकर महादेवन, हरिहरन या शुभा मुद्गल—के फ्यूजन प्रयोगों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

- डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम की सिम्फोनिक रचनाओं में भारतीय गायन की संरचनात्मक भूमिका पर स्वतंत्र शोध संभव है।
- फ्यूजन संगीत के प्रति श्रोताओं की प्रतिक्रिया तथा संगीत-शिक्षा में फ्यूजन गायकी के प्रशिक्षण पर सर्वेक्षण-आधारित अध्ययन किए जा सकते हैं।

11. संदर्भ-सूची

- गर्ग, लक्ष्मीनारायण (सम्पा.). (2020). संगीत विशारद (22वाँ संस्करण)। संगीत कार्यालय।
- परांजपे, शरच्चंद्र श्रीधर. (2010). भारतीय संगीत का इतिहास। चौखम्बा विद्याभवन।
- मिश्र, लालमणि. (1973). भारतीय संगीत वाद्य। भारतीय ज्ञानपीठ।
- भारतपीडिया. (तिथि उपलब्ध नहीं)। रामायण: राजकुमार राम की कथा।
- बूथ, ग्रेग डी. (2008). पर्दे के पीछे: मुंबई के फिल्म स्टूडियो में संगीत निर्माण। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- क्लेटन, मार्टिन. (2000). भारतीय संगीत में समय: उत्तर भारतीय राग-प्रदर्शन में लय, मात्रा और स्वरूप। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मिलान स्थित भारत का महावाणिज्य दूतावास. (2022). यूरोप में महात्मा सिम्फनी का प्रथम प्रदर्शन: एल. सुब्रह्मण्यम एवं डॉ. कविता कृष्णमूर्ति कार्यक्रमचित्र-संग्रहकार्यक्रम चित्र-संग्रह।
<https://www.cgimilan.gov.in/archive/events-photo-gallery/20/8/>
- मैड्रिड स्थित भारतीय दूतावास. (2022). इंडिया@75 समारोह: महात्मा सिम्फनी संगीत-कार्यक्रम।
<https://www.eoimadrid.gov.in/india-75-fes.php>
- फैरेल, जेरोल्ड. (1997). भारतीय संगीत और पश्चिमा क्लैरेंडन प्रेस।
- हांगकांग फिलहारमोनिक ऑर्केस्ट्रा. (2021). भारत की ओर एक संगीतमय यात्रा संगीत-कार्यक्रमविवरण; 20 फरवरी 2021 कार्यक्रमरहसंगीत-कार्यक्रम विवरण; 20 फरवरी 2021 का कार्यक्रम रद्द।
- हांगकांग फिलहारमोनिक ऑर्केस्ट्रा. (तिथि उपलब्ध नहीं)। कविता कृष्णमूर्ति कलाकारपरिचयकलाकार परिचय।
- ह्यूस्टन आर्ट्स जर्नल. (4 अगस्त, 2022). गांधी से प्रेरित विश्व-प्रीमियर: इंडो-अमेरिकन एसोसिएशन और ह्यूस्टन सिम्फनी का पहला सहयोग।
- लावेजोली, पीटर. (2006). पश्चिम में भारतीय संगीत का उदय: भैरवी। कॉन्टिन्यूअम।
- मैनुअल, पीटर. (1993). कैसेट संस्कृति: उत्तर भारत में लोकप्रिय संगीत और प्रौद्योगिकी। शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।
- मासाओका, मिया. (तिथि उपलब्ध नहीं)। ग्लोबल फ्यूजन (1999) एल्बमविवरणएल्बम विवरण।
<https://miyamasaka.com/albums/1999/global-fusion/>
- मॉरकॉम, अन्ना. (2007). हिंदी फिल्मी गीत और सिनेमा। ऐशगेट।
- रानाडे, अशोक दामोदर. (2006). हिंदी फिल्मी गीत: सीमाओं से परे संगीत (द्वितीय संस्करण)। प्रोमिला एंड कंपनी / बिब्लियोफाइल साउथ एशिया।
- स्मिथसोनियन राष्ट्रीय एशियाई कला संग्रहालय. (तिथि उपलब्ध नहीं)। एल. सुब्रह्मण्यम: भारतीय संगीत के उस्ताद पॉडकास्टपॉडकास्ट।
- सुब्रह्मण्यम, एल. (1999). ग्लोबल फ्यूजन संगीतएल्बमसंगीत एल्बम। एराटो डेटूर / वार्नर।
- सुब्रह्मण्यम, एल. (21 दिसंबर, 2024). फ्रीडम सिम्फनी, प्रथम खंड: कविता कृष्णमूर्ति एवं बिंदु सुब्रह्मण्यम, लाइपजिग फिलहारमोनिक ऑर्केस्ट्रा के साथ वीडियोवीडियो। यूट्यूब।
- हॉबी सेंटर. (2022). डॉ. एल. सुब्रह्मण्यम एवं कविता कृष्णमूर्ति, ह्यूस्टन सिम्फनी के साथ कार्यक्रमविवरणकार्यक्रम विवरण।
- वेड, बॉनी सी. (1979). भारत में संगीत: शास्त्रीय परंपराएँ। प्रेंटिस-हॉल।
- कविता कृष्णमूर्ति सुब्रह्मण्यम. (व्यक्तिगत साक्षात्कार)। (साक्षात्कार की वास्तविक तिथि यहाँ लिखें)

English References

- Bharatpedia. (n.d.). Ramayana: The legend of Prince Rama. <https://en.bharatpedia.org/wiki/Ramayana: The Legend of Prince Rama>
- Booth, G. D. (2008). Behind the curtain: Making music in Mumbai's film studios. Oxford University Press.
- Clayton, M. (2000). Time in Indian music: Rhythm, metre and form in North Indian rag performance. Oxford University Press.
- Consulate General of India, Milan. (2022). Premiere of Mahatma Symphony in Europe by Dr. L. Subramaniam and Dr. Kavita Krishnamurti EventgalleryEvent gallery. <https://www.cgimilan.gov.in/archive/events-photo-gallery/20/8/>
- Embassy of India, Madrid. (2022). India@75 events: Mahatma Symphony concert. <https://www.eoimadrid.gov.in/india-75-fes.php>
- Farrell, G. (1997). Indian music and the West. Clarendon Press.
- Hong Kong Philharmonic Orchestra. (2021). A musical journey to India Concertpage,cancelled20February2021Concert page, cancelled 20 February 2021. <https://www.hkphil.org/concert/a-musical-journey-to-india>
- Hong Kong Philharmonic Orchestra. (n.d.). Kavita Krishnamurti ArtistprofileArtist profile. <https://www.hkphil.org/artist/kavita-krishnamurti>
- Houston Arts Journal. (2022, August 4). A world premiere inspired by Gandhi marks the first collaboration between the Indo-American Association and Houston Symphony. <https://houstonartsjournal.com/2022/08/04/a-world-premiere-inspired-by-gandhi-marks-the-first-collaboration-between-the-indo-american-association-and-houston-symphony/>
- Lavezzoli, P. (2006). The dawn of Indian music in the West: Bhairavi. Continuum.
- Manuel, P. (1993). Cassette culture: Popular music and technology in North India. University of Chicago Press.
- Masaoka, M. (n.d.). Global fusion (1999) AlbumcreditsAlbum credits. <https://miyamasaka.com/albums/1999/global-fusion/>
- Morcom, A. (2007). Hindi film songs and the cinema. Ashgate.
- Ranade, A. D. (2006). Hindi film song: Music beyond boundaries (2nd ed.). Promilla & Co. / Bibliophile South Asia.
- Smithsonian National Museum of Asian Art. (n.d.). L. Subramaniam: Master of Indian music PodcastPodcast. <https://asia-archive.si.edu/podcast/l-subramaniam-master-of-indian-music-2/>
- Subramaniam, L. (1999). Global fusion AlbumAlbum. Erato Detour/Warner.
- Subramaniam, L. (2024, December 21). Freedom Symphony, Movement 1 – Kavita Krishnamurti & Bindu Subramaniam with the Leipzig Philharmonic Orchestra VideoVideo. YouTube. https://www.youtube.com/watch?v=Ej1tgK_3Hoc
- The Hobby Center. (2022). Dr. L. Subramaniam & Kavita Krishnamurti with the Houston Symphony EventlistingEvent listing. <https://www.thehobbycenter.org/events/celebrating-indias-75th-independence-day/>
- Wade, B. C. (1979). Music in India: The classical traditions. Prentice-Hall.